P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-4*(Supplementary Issue) July- 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

मोहन राकेश के नाटकों में पारिवारिक बिखराव

सारांश

मनुष्य एक सामाजिक एवं जीवन्त प्राणी है समाज में जीवन–यापन करते हुए, वह स्वनिर्मित सम्बन्धों को जीता और उपभोग करता है अपनी विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु वह अन्य व्यक्तियों के साथ अन्तः क्रिया करता हुआ सामाजिक सम्बन्धों को स्थापित करता है हम यह जानते हैं कि समाज सम्बन्धों का जाल है समाज की संरचना होती है, समाज परिवर्तनशील और विकासशील है मनुष्य अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए संबंध का सृजन करता है और उनका निर्वाह करता है संगठित समाज में संबंध संगठित रहते हैं और विघटित समाज में यही सामाजिक संबंध अस्त–व्यस्त और अव्यवस्थित रहते हैं प्रत्येक समाज में हर एक व्यक्ति की एक निश्चित स्थिति, पद और उससे सम्बन्धित विशेष कार्य होते हैं इनमें जब असन्तुलन उत्पन्न होने लगता है तब विघटन शुरू हो जाता है सामाजिक विघटन की स्थिति में व्यक्ति अपने कर्त्तव्य, आदर्श, मूल्य भूल जाते हैं, जिससे सामाजिक संरचना अस्त–व्यस्त होने लगती है।

मुख्य शब्द : मोहन राकेश, सामाजिक विघटन, सामाजिक परिवर्तन।

किरन लता दुबे
शोध छात्रा,
हिन्दी विभाग,
वर्धमान विश्वविद्यालय,
पश्चिम बंगाल

प्रस्तावना

सामाजिक विघटन एक प्रक्रिया है सामाजिक परिवर्तन भी एक प्रक्रिया है यह प्रक्रिया समाज नें निरंतर चलती रहती है सामाजिक संरचना में असन्तुलन एवं अव्यवस्था विघटन की ओर संकेत करते हैं समाज में कुछ ऐसे तत्व और कारण मौजूद रहते हैं जो विघटन को जन्म देते हैं यह विघटन एक स्थिर दशा नहीं होती सामाजिक विघटन कम या ज्यादा मात्रा में सभी समाजों में हमेशा एक प्रक्रिया के रूप में पाया जाता है यह उन घटनाओं की ओर संकेत करता है जो व्यक्तियों एवं समूहों की स्वाभाविक क्रियाशीलता में बाधा उत्पन्न करता है कालिदास, अम्बिका, मल्लिका, विलोम, मातुल, नंद, सुंदरी, अलका और श्यामांग, श्वेतांग, महेन्द्रनाथ, सावित्री, अशोक, बड़ी लड़की, छोटी लड़की, जुनेजा, अयूब, सलमा, नीरा, रीता आदि पात्रों के जीवन को ऐसे स्थल पर देखा जा सकता है ये पात्र निरन्तर विभिन्न प्रकार की बाधाओं के बीच अपने जीवन के लिए भीतर–बाहर से संघर्षशील रहते हैं।

सामाजिक विघटन में व्यक्ति एवं परिवार की भी महत्त्वपूर्ण भूमिका है परिस्थितियों में बदलाव आने के साथ–साथ व्यक्ति एवं परिवार की आवश्यकताओं में भी परिवर्तन होता रहता है व्यक्ति एवं परिवार के विघटन से अन्य लोगों से उसके संबंध भी विघटित हो जाते हैं वर्तमान समय में परिवार के स्वरूप, सदस्यों के दृष्टिकोणों, मूल्यों और विचारों में अनेकानेक परिवर्तन हो रहे हैं लेकिन उतनी तीव्रता से परिवार के प्राचीन आदर्शों, प्रतिमानों एवं मूल्यों आदि में परिवर्तन नहीं हो पाता परिवार के सदस्यों के बीच परस्पर प्रेम, त्याग, सेवा, सहयोग आदि भावनाओं की जगह स्पर्द्धा, तनाव, ईर्ष्या, घृणा इत्यादि ने ले ली है इस कारण परिवार के आपसी संबंधों में एक प्रकार का तनाव, उदासीनता और अलगाव की भावना देखने को मिलती है जब परिवार के सदस्यों में व्यक्तिगत स्वार्थ, तनाव, पारस्परिक भावनाओं के प्रति अरूचि, सहयोग का अभाव, मान्य–नियमों के प्रति अरूचि उत्पन्न हो जाती है, तब परिवार में विघटन की स्थिति उत्पन्न हो जाती है आज परिवार का वह स्वरूप मौजूद नहीं है जो वर्षों पहले था आषाढ़ का एक दिन, लहरों के राजहंस, आधे–अधूरे तथा पैर तले की जमीन के पारिवारिक संबंधों एवं व्यक्तिगत जीवन के उदाहरण यह सब कुछ दर्शाते हैं।

अध्ययन का उद्देश्य

मोहन राकेश मनुष्य के सम्बन्धों का अध्ययन करते हुये पारिवाकर संबंध तथा विवाह पर विशेष ध्यान और बल देते हैं। परिवार के सभी सदस्यों के संबंध, संबंध जीने के लिये जीवन की जरूरतों पर विचार–विमर्श, जरूरी कामकाज के तथ्यों और सत्यों को पारिवारिक संबंधों से बाहर जाकर ग्राम प्रांतर से राजकीय

संबंध तक देखते, समझते और प्रदर्शित करे हैं। उनकें नाटकों में आषाढ़ का एक दिन, लहरों के राजहंस, आधे–अधूरे और पैर तले की जमीन महत्वपूर्ण नाटक हैं। मनुष्य के प्राकृतिक संबंधों और भीतर ही भीतर जटिल हो रहे आन्तरिक लोकों को पूरी गहराई से प्रकट करते हैं।

सामाजिक विघटन का अर्थ स्पष्ट करते हुए इलियट और मेरिल ने बताया है सामाजिक विघटन एक

साहित्य की विधा के रूप में नाट्याकृति का संबंध व्यक्ति परिवार और समाज के जीवन से सम्बन्धित है मोहन राकेश के नाटकों में विघटन के महत्त्वपूर्ण चित्र प्राप्त होते हैं उनकी कृतियों से गुजरते हुए इन चित्रों का अध्ययन प्रस्तुत किया जा सकता है–

> विलोम–देख रहा हूँ इस समय तुम बहुत दुःखी हो.... और तुम दुःखी कब नहीं रहीं, अम्बिका? तुम्हारा तो जीवन ही पीड़ा का इतिहास है पहले से कहीं दुबली हो गयी हो?.... सुना है कालिदास उज्जयिनी जा रहा है।
> अम्बिका– मैं नहीं जानती।
> विलोम– राज्य की ओर से उसका सम्मान होगा कालिदास राजकवि के रूप में उज्जयिनी में रहेगा मैं समझता हूँ उसके जाने से पहले ही उसका और मल्लिका का विवाह हो जाना चाहिए इस सम्बन्ध में तुमने सोचा तो होगा?[3]

विवाह बहुत ही महत्त्वपूणर्र् विषय है यह विषय अति संवेदनशील है व्यक्ति, परिवार और समाज के सम्बन्धों के बीच विवाह जीवन के महत्त्वपूणर्र् मौलिक सम्बन्ध के रूप में प्रकट होता है मनुष्य की एक मौलिक आवश्यकता है यह आवश्यकता जीवन के सृजन की आवश्यकता है मनुष्य यहाँ एकाकी नहीं रहता वह एक सहयात्री से सम्बन्धित होता है और जीवन को एक व्यापक धरातल पर देखता, समझता और जीता है यह सम्बन्ध अंतरंग सम्बन्ध है एवं समाज के विभिन्न संबंधों को जीवन्त, गतिशील और अर्थपूर्ण अभिप्राय में प्रस्तुत करने की दृष्टि से महत्त्वपूणर्र् है यह मात्र मांसल आवश्यकता की पूर्ति नहीं है, वरन् सृजनात्मक अर्थ में अत्यधिक गम्भीर और कोमल है साधारणतः यह सम्बन्ध बाहरी हस्तक्षेपों का निशेध करता है अंतरंग सम्बन्ध होने के कारण इस संदर्भ में परस्पर सहयात्री विचार तथा भाव महत्वपूर्ण होते हैं परिचित–अपरिचित व्यक्तियों के अयाचित आगमन, उपस्थिति तथा हस्तक्षेप निषिद्ध होते हैं आषाढ़ का एक दिन में विलोम ऐसा पात्र है जो इन सभी बिन्दुओं से पतित है, वह अयाचित पात्र है कालिदास, अम्बिका तथा मल्लिका के व्यक्तिगत तथा पारिवारिक जीवन में जब तब और कहीं भी घुस जाता है जहाँ कहीं घुस जाता है, उसे यह ध्यान भी नहीं है कि किसी के जीवन में अवांछित होकर उसकी इच्छा के विरूद्ध प्रवेश करना तथा हस्तक्षेप करना उचित नहीं है व्यक्ति का जीवन निजी जीवन होता है दूसरे बिन्दु पर व्यक्ति पारिवारिक जीवन का प्राणी होता है ऐसी स्थिति में निजी और पारिवारिक

प्रक्रिया है जिसके द्वारा एक समूह के सदस्यों के बीच सम्बन्ध टूट जाते या समाप्त हो जाते हैं।[1]

लैंडिस यह मानते हैं कि सामाजिक नियन्त्रण की व्यवस्था का भंग होना और विश्रंखलता उत्पन्न हो जाना ही सामाजिक विघटन है।[2]

इस प्रकार विद्वानों के मतों के प्रकाश में सामाजिक विघटन का सत्य प्राप्त होता है यह विघटन समाज के संबंधों और व्यवहारों में देखा जाता है जीवन के संदर्भ में किसी बाहरी व्यक्ति का अपनी सीमा में रहना ही अच्छा है अन्यथा एक साथ ही निजी व्यक्तिगत जीवन तथा पारिवारिक और सामाजिक जीवन में भी कई प्रकार की जटिल समस्यायें उत्पन्न हो जाती हैं जयदेव तनेजा के अनुसार चरित्रांकन की दृष्टि से खलनायक की परम्परागत धारणाओं को तोड़कर मानवीय रूपाकार ग्रहण करता विलोम का आधुनिक व्यक्तित्व भारतीय नाट्या परम्परा में अपूर्व है।[4] विलोम इस दृष्टि से आत्मविलोम है, बिल्कुल उल्टा

> अम्बिका– मैं देख रही हूँ तुम्हारी बात ही सच होने जा रही है अग्निमित्र सन्देश लाया है कि वे लोग इस सम्बन्ध के लिए प्रस्तुत नहीं हैं कहते हैं....
> मल्लिका– क्या कहते हैं? क्या अधिकार है उन्हें कुछ भी कहने का? मल्लिका का जीवन उसकी अपनी सम्पत्ति है वह उसे नष्ट करना चाहती है तो किसी को उस पर आलोचना करने का क्या अधिकार है?
> अम्बिका– मैं कब कहती हूँ मुझे अधिकार है?
> मल्लिका– मैं तुम्हारे अधिकार की बात नहीं कह रही
> अम्बिका– तुम न कहो, मैं कह रही हूँ आज तुम्हारा जीवन तुम्हारी सम्पत्ति है मेरा तुम पर कोई अधिकार नहीं है। [5]

मोहन राकेश समाज में संवेदनशील सम्बन्धों के प्रति लोगों के भाव, विचार तथा काम–काज के चित्रों को गहराई से दर्शाते हैं मनुष्य अपने तथा अपने घर–परिवार के सदस्यों के लिए जीवन की मौलिक आवश्यकताओं की पूर्ति करते हुए जिस प्रकार जितना ध्यान अपने और अपने परिवार पर रखना चाहिए, उतना वह नहीं रख पाता एक विचित्र सत्य है कि वह दूसरे और दूसरे के जीवन के व्यक्तिगत सम्बन्धों, रूचियों, विचारों तथा काम–काजों में ज्यादा व्यस्त हो जाता है वह अपने तथा अपने घर परिवार के संदर्भ में जितनी जानकारी प्राप्त नहीं करता और न रखता है उससे अधिक जानकारी दूसरों के बारे में, सुनता, खोजता, रखता और कहता चलता है अम्बिका तथा मल्लिका के पारिवारिक एवं व्यक्तिगत जीवन के बारे में, समाज में फैले विचारों एवं अपवादों का जटिल चित्र राकेश दिखलाते हैं यहाँ सामाजिक विघटन के जटिल चित्र का ही रेखांकन है डॉ गोविन्द चातक के अनुसार अम्बिका अपनी पीड़ा तो झेलती ही है, साथ ही मल्लिका की तात्कालिक और भावी पीड़ा को भी अपने भीतर लिए हुए है वह अपने शरीर में ही नहीं, अपनी शरीर के बाहर

P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-4*(Supplementary Issue) July- 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 Remarking An Analisation

मल्लिका में भी जीती है अम्बिका और मल्लिका यथार्थ और भावना को एकदम आमने–सामने खड़ा कर देते हैं6

लहरों के राजहंस में सुंदरी और नंद के जीवनानुभव में जीवन के विघटन का त्रासद रूप देखा जा सकता है–

सुंदरी–आप व्यवस्था के संबंध में कुछ कह रहे थे
नंद– हाँ, मैं कह रहा था कि संभव है उतने लोग न भी आएँ, जितने लोगों के आने की हम आशा कर रहे हैं
सुंदरी– क्यों, आज तक कभी हुआ है कि कपिलवास्तु के किसी राजपुरूष ने इस भवन से निमंत्रण पाकर अपने को कृतार्थ न समझा हो? कोई एक भी व्यक्ति कभी समय पर आने से रहा हो? अस्वस्थता के कारण या नगर से बाहर रहने के कारण कोई ना आ पाए, तो बात दूसरी है
नंद– मैं यही तो कह रहा था कि..... संभव है.....कुछ लोगों के लिए ऐसे कुछ कारण हो जाएँ....सोमदत्त और विशाखदेव के यहाँ मैं अभी स्वयं होकर आया था
सुंदरी– आप स्वयं....उन लोगों के यहाँ होकर आए हैं? क्यों? आपका स्वयं लोगों के यहाँ जाना......विशेष रूप से यह कहने के लिए.......यह क्या अपमान का विषय नहीं है?[7]

किन्हीं को कृतार्थ करने के लिए आमंत्रित करना मानवीय संबंध का सृजन अथवा निर्वहन नहीं है यह मनुष्य को छोटा समझना और उसे उसके छोटे–पन का एहसास कराते रहना है यह अमानवीय व्यवहार है लहरों के राजहंस में सुंदरी तथा नंद के मध्य संवाद मनुष्य के मन तथा व्यवहार के स्तर पर जटिल सूक्ष्म क्षरण दर्शाते हैं

इसी प्रकार नंद तथा सुंदरी के मध्य ये संवाद जीवन के जटिल सत्य का रेखांकन करते हैं–

नंद– मैं विशेष रूप से नहीं गया
गया था देवी यशोधरा से मिलने
सुंदरी– देवी यशोधरा से मिलने?
नंद– उन्होंने बुला भेजा था
सुंदरी– बुला भेजा था? क्यों?
नंद– उन्होंने कहलाया था कि कल से वे इस भवन में नहीं रहेंगी....बाहर भिक्षुणियों के शिविर में चली जाएँगी, इसलिए....
सुंदरी– इसलिए क्या?
नंद– इसलिए चाहती हैं कि आज अंतिम बार भवन में अपने सब बांधवों से मिल लें
सुंदरी– तो उनके मन का मोह अभी छूटा नहीं है?
नंद– मोह की बात....(बात चीत में ही रोककर)...हो सकता है ऐसा ही हो... उन्होंने कहलाया तुम्हारे लिए भी था
सुंदरी– और आपने जाकर मेरी ओर से क्षमा माँग ली
नंद– नहीं मैंने कहा कि तुमने आज कुछ अतिथियों को निमांत्रित कर रखा है इसलिए....
सुंदरी– अतिथियों को निमंत्रित कर रखा है, इतना ही? कामोत्सव की बात नहीं कह सके?
नंद– कहने की आवश्यकता नहीं थी वे यह बात जानती थी उन्होंने स्वयं ही कहा कि....
सुंदरी– वे जानती थीं न? मुझे पता था वे अवश्य जानती है.... क्या कहा उन्होंने?
नंद– कहा कि अपनी व्यस्तता के कारण तुम न भी आ सको, तो मैं तुम्हें उनका आर्शीवाद.........
सुंदरी– आत्म–वंचना की भी एक सीमा होती है आज के दिन आर्शीवाद देंगी और मुझे! मन में क्या सोच रही होगी, मैं अच्छी तरह जानती हूँ उन्हीं के कारण....[8]

सुंदरी एक ही साथ सारी चीजों को लपेट लेती है यहाँ घटना, सम्बन्ध, आवश्यकता तथा अन्य कई बिन्दु ऐसे होते हैं जिन्हें एक साथ लपेट लेने से कई प्रकार की समस्यायें उत्पन्न हो जाती हैं इन समस्याओं में मनुष्य स्वयं फँस और उलझ जाता है कई बार दूसरों के बारे में अवांछित पूर्वाग्रह निर्मित कर लिए जाते हैं परेशानियाँ और बढ़ जाती है कि अंततः घटनाओं, संदर्भों, विचारों, भावनाओं अथवा व्यक्ति व्यवहार तथा पूर्व निर्मित निर्णय अव्यवहारिक और झूठे साबित होते हैं दो विपरीत विरोधों के बीच मनुष्य का मन यदि संतुलन न रख पाये तो मनकी स्थिति जीवन्त नहीं रह पाती सुंदरी की स्थिति भी यही है

आधे–अधूरे का अध्ययन करते समय हम यह देखते है कि सामाजिक विघटन किस प्रकार पूरे घर परिवार और पात्र के जीवन को भीतर और बाहर से विघटित करता है बड़ी लड़की, सावित्री और महेन्द्रनाथ के बीच के सम्बन्ध ऐसी ही स्थिति दर्शाते हैं–

बड़ी लड़की– मेरा मतलब है....कि शादी से पहले मुझे लगता था कि मनोज को बहुत अच्वी तरह जानती हूँ पर अब आकर.....अब आकर लगने लगा है कि वह जानना बिल्कुल जानना नहीं था
स्त्री–हूँ!.... तो क्या उसके चरित्र में कुछ ऐसा है जो....?
बड़ी लड़की– नहीं उसके चरित्र में ऐसा कुछ नहीं है इस लिहाज़ से बहुत साफ आदमी है वह

स्त्री– तो फिर क्या उसके स्वभाव में कोई ऐसी बात है जिससे?
बड़ी लड़की– नहीं स्वभाव उसका हर आदमी जैसा है, बल्कि आम आदमी से ज़्यादा खुशदिल कहना चाहिए उसे
स्त्री– तो फिर?
बड़ी लड़की– यही तो मैं भी नहीं समझ पाती पता नहीं कहाँ पर क्या है जो ग़लत है
स्त्री– उसकी आर्थिक स्थिति ठीक है?
बड़ी लड़की– ठीक है
स्त्री– सेहत?
बड़ी लड़की– बहुत अच्छी है
पुरूष एक– सब–कुछ अच्छा–ही–अच्छा है फिर तो शिकायत किस बात की है?
स्त्री– तुम बात समझने भी दोगे? जब इनमें से किसी चीज़ की शिकायत नहीं है तुझे, तब या तो कोई बहुत ख़ास वजह होनी चाहिए, या.....
बड़ी लड़की– या?
स्त्री– या.....या......मैं अभी नहीं कह सकती
बड़ी लड़की– वजह सिर्फ वह हवा है जो हम दोनों के बीच से गुज़रती है
पुरूष एक– क्या कहा....हवा?
बड़ी लड़की– हाँ, हवा
पुरूष एक– यह वजह बताई है इसने.. .....हवा!
स्त्री– मैं तेरा मतलब नहीं समझी?
बड़ी लड़की– मैं शायद समझा भी नहीं सकती किसी दूसरे को तो क्या, अपने को भी नहीं समझा सकती ममा, ऐसा भी होता है क्या कि......
स्त्री– कि?
बड़ी लड़की– कि दो आदमी जितना ज़्यादा साथ रहें, एक हवा में साँस लें, उतना ही ज़्यादा अपने को एक–दूसरे से अजनबी महसूस करें।[9]

मोहन राकेश अपने नाटकों में संबंधों पर विचार करते हुए मनुष्य के रूप में स्त्री तथा पुरूष पात्रों को विविध घटनाओं संबंधों के बीच उभारते तथा उलटते–पुलटते और दर्शाते समय रेखांकित करते रहते हैं इस प्रकार पुरूष तथा स्त्री पात्र की आकृतियाँ बनती रहती हैं पुरूष तथा स्त्री को रेखांकित करते हुए संवेदना का टकराव इन दोनों पात्रों के मध्य करते हैं ये पात्र एक दूसरे के सम्मुख होते हैं, कभी पीछे अथवा अगल–बगल में दोनों ही पात्रों का सृजन करते हुए उनकी मानसिकताओं का संश्लेषण और विश्लेषण करते हैं कि पात्र अपनी समस्त विशेषताओं के साथ महत्वपूर्ण हो उठते हैं अपनी तरह से जीवन रचते और बसते हैं डॉ प्रतिभा अग्रवाल के अनुसार राकेश के तीनों ही नाटकों में स्त्री पात्र पर्याप्त महत्वपूर्ण है।[10]

पैर तले की ज़मीन के इस संवाद के साथ हम आधे–अधूरे के जीवन को जोड़कर देख सकते है ऐसे संवाद के माध्यम से जीवन की विभिन्न घटनाओं का अध्ययन करते हुए हम यह देखते है कि जीवन का एक मिथ्या सच स्पष्ट होता है– अयूब– इस बात को छोड़ो क्या तुम सोच सकते हो कि मियाँ– बीवी के रिश्तों के बीच अगर कोई छाया भी आ जाए, तो क्या से क्या हो सकता है....गलत मत समझना......मेरी बीवी की ज़िंदगी में और कोई नहीं है, पर मेरे लिए वह एक कब्रिस्तान बन गई है......औरत कब्रिस्तान क्यों बन जाती है?

पण्डित–क्यों बन जाती है शायद उसके भीतर कुछ मर जाता है...........
अयूब– लेकिन क्यों मर जाता है
पण्डित– इसके लिए हर आदमी की अपनी वजह हो सकती है उसकी अपनी वजह होगी।[11]

निष्कर्ष

इस प्रकार हम यह देखते है कि सामाजिक संरचना के अंतर्गत जीवनानुभव को लेकर नाट्याकार मनुष्य के विविध–संबंधों का गहन अध्ययन करते हैं नाट्याकार संबंधों के विविध लोकों को दर्शाते हुए भीतर ही भीतर घटित हो रहे जटिल विघटन को रेखांकित करते हुए मनुष्य का रंगबिम्ब प्रस्तुत करते हैं

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *Elliott And MevWvWill] Social ¤isovWganisation] NewyovWk] HavWpevW BvWothevWs*
2. *Landis] P-H-] An IntvWoduction to Sociology NewyovWk Thomas Y- CvWowell Company*
3. *मोहन राकेश, आषाढ़ का एक दिन, राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली–6, संस्करण–2008, पृष्ठ सं–35–36*
4. *तनेजा, डॉ जयदेव, मोहन राकेश–रंग शिल्प और प्रदर्शन, राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली–2, प्रथम संस्करण–1996, पृष्ठ सं–56*
5. *मोहन राकेश, आषाढ़ का एक दिन, राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली–6, संस्करण–2008, पृष्ठ सं–12*
6. *चातक, डॉ गोविन्द, आधुनिक हिन्दी नाटक का अग्रदूत मोहन राकेश, राधाकृष्ण प्रकाशन, प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली–2, पृष्ठ सं–61*
7. *मोहन राकेश, लहरों के राजहंस, राजकमल प्रकाशन प्रालि, नई दिल्ली–2, पुनर्मुद्रित संस्करण–1997, पृष्ठ सं–52*
8. *वही, पृष्ठ सं–53–54*
9. *मोहन राकेश, आधे–अधूरे, राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली–2, आवृत्ति संस्करण–2008, पृष्ठ सं–26–27*
10. *अग्रवाल, डॉ प्रतिभा, भारतीय साहित्य के निर्माता मोहन राकेश, साहित्य अकादमी, रवीन्द्र भवन, 35 फ़ीरोजशाह मार्ग, नई दिल्ली–1, पृष्ठ सं–58*
11. *मोहन राकेश, पैर तले की ज़मीन, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली–6, संस्करण–2009, पृष्ठ सं–41*